251
H 10 P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

12S51
1018

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 251

2
17|1

891.431
At H Ab

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931
140
Lx61
251

❀ बन्देमातरम् ❀

अटल राज की कुञ्जी

अर्थात

❀ महात्मा जी की पुकार ❀

प्रयाग ।
१०००
मूल्य ॥

भाइयो

देश की उन्नति

रोज़ाना घर घर

चर्खा चलाने

व

खादी पहनने से

होगी ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 251
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ बन्देमातरम् ❀

❀ महात्मा जी की पुकार ❀

ग़ज़ल

सतावो ज़ुलम ढावो तुम धीरे २।
सहे हिन्द कब तक सितम धीरे २॥

हुये हम सयाने और अधिकार लेंगे।
जमावेंगे राहो रसम धीरे २॥

तुम्हारे ज़ुलम का ख़ुदा देगा बदला।
तुम्हारे हों सारे करम धीरे २॥

लिया लूट हा हमको नादां समझ कर।
लिया हाथ सारा धरम धीरे २॥

न तुमको ग़रज़ हमसे कोई है साहब।
चलो अपने देश तुम बेशरम धीरे २॥

नहीं एक दिन सरपे आवे क़यामत।
हो जावोगे सख़्तो, नरम धीरे २॥

सहे अब तलक ज़ुल्म अपना समझ कर।
सहे हिन्द कब तक सितम धीरे २॥

खद्दर महिमा

वतन की गुलामी छोड़ायेगा खद्दर,
गरीबों की इज्ज़त बचायेगा खद्दर।
हिन्दू है ताना मुसलमान बाना,
बिनावट में दोनों को लायेगा खद्दर।
सड़ा लंका शायर मरा मान चेष्टर,
विदेशी की धज्जी उड़ायेगा खद्दर।
जो कोई भी खद्दर से नफ़रत करेंगे,
उन्हें भूत बनकर सतायेगा खद्दर।
कहें गान्धी बाबा जो पहिनोगे खद्दर,
तो शीघ्र स्वराज्य दिलायेगा खद्दर।

ग़ज़ल

उठा लो डेरा ऐ टोप वालो यहां तुम्हारा गुज़र नहीं है ॥
जो मुद्दतों से यों सो रहे थे अब जग पड़े हैं वे शेर सारे।
मिटा रहे हैं महज़ खुमारी हुआ फ़जिर क्या ख़बर नहीं है ॥
बचा के डंका निकल पड़े हैं मैदान जंगे आ खड़े हैं।
वतन हमारा मज़े उड़ाते हो तुम हमें अब सबर नहीं है ॥
दिखाओ भाले चला दो गोली जकड़ दो बेड़ी हमें पकड़ के।
झुला दो फांसी पै जो चाहे तो हमें ज़रा भी उज़र नहीं है ॥
निकल पड़े हैं बढ़े चलेंगे हटेंगे पीछे न पैर हरगिज़।
अब तो वतन पै हम मर मिटेंगे दहल उठे वह जिगर नहीं है ॥
उठा लो डेरा ऐ टोप वालो० ॥

ख्याल

निकल पड़े मैदान जङ्ग में गर कोई अभिमानी है।
आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है॥
उठ बैठो सब काम छोड़ कर आज देश हित नारी नर।
बलिदानों का ढेर लगा दो स्वतन्त्रता की वेदी पर॥
दहला दो दिल्ली दीवारैं ओ भारत के बांके बीर।
चूर चूर कर दो सदियों की पराधीनता की जंजीर॥
आज हिन्द में फिर से मर कर नई जान पहिनानी है।
आज देखना है किसमें कितना०

लाल जवाहिर लूट लिये हमने भी कुछ परवाह न की।
बीर जवाहिर लेने पर हमने मुख से कुछ आह न की॥
प्राण जवाहिर आज छिन गया क्या चुपके रह जावोगे।
शर्मावोगे ज़रा नहीं क्या कुल में दाग़ लगाओगे॥
ब्याज सहित इन बनियों से हमको सब रक़म चुकानी है।
आज देखना है किसमें कितना०

रण दुंदुभी बजी गांधी की सहज कोई कप्तान नहीं।
य होंगे आज़ाद नहीं तो तन में होगी जान नहीं॥
किन्तु न कल से रहने देंगे अकल ठिकाने कर देंगे।
हम भारतीय आज मर कर माता की झोली भर देंगे॥
माधव' आज लाज गांधी की मर कर उसे बचानी है।
आज देखना है किसमें कितना०

गज़ल

भारत के नव जवानो मैदान जंग आओ,
बन देश प्रेमी अपना जीवन सफल बनाओ।
वे वीर त्यागी अपना कर्तव्य कर रहे हैं,
है राह उनकी सीधी उसपै क़दम बढ़ाओ।
है कौन ऐसी शक्ती जो तुमको रोक लेगी,
गर एक साथ होकर बल अपना तुम दिखाओ।
भय त्याग दो अभय बन स्वातन्त्र जंग छेड़ो,
भू माँ को अपनी वीरो बन्धन से तुम छोड़ाओ।

गज़ल

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।
होगा ज़रूर होगा आता है वो ज़माना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न रह सकैंगे।
होगा जरूर होगा ये बन्द जुल्म ढाना॥
ख़ूँ खौलने लगेगा हिन्दोस्तानियों का।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
भारत के हम हैं बच्चे भारत हमारी माता।
मन्जूर है हमको उसके वेदी पै सर चढ़ाना॥
भारत न रह०

राधेश्याम की रामायण के ढङ्ग पर

चलने दो हाथ निहत्थों पर,
जत्थों पर जत्थे आवेंगे।
गांधी एक के इशारे पर,
लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे॥
तोड़े, क़ानून किताबों का,
छापेख़ाने—अख़बारों का।
इस अनाचार के शासन को,
हाथी-हाथों चर जावेंगे॥
मरते हैं बीर समर में ही,
कायर सौ बार मरा करते।
यह जीवन जाल ज्वाल हुआ,
मर कर भी अमर कहावेंगे॥
भागों से स्वर्ण सुयोग मिला,
सेनापति गांधी सा पाया।
इस लिये "दास" रण-गंगा में,
खुल करके खूब नहावेंगे॥

रंग दे बसन्ती चोला

मेरा रंग दे बसन्ती चोला भाई रंग दे बसन्ती चोला।
इसी रंग में गाँधी जी ने नमक पर धावा बोला॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में वीर सिवा ने माँ का बन्धन खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में भगत दत्त ने छोड़ा बम का गोला॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में पेशावर में पठानों ने सीना खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में बिस्मिल असफ़ाक़ ने सरकारी ख़ज़ाना खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में वीर मदन ने गौरमेन्ट पर धावा बोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग का गुरु गोविन्द ने समझा परम अमोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

इसी रंग में पद्म कान्त ने माडर्न पर धावा बोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥

मुद्रक और प्रकाशक—सरयू लाल राजा प्रेस, प्रयाग।